कुलगीत

'सुर के इन्द्र', उमा के शंकर, तेरी कृपा हुई
सरगम हो गए सारे अक्षर, तेरी कृपा हुई।

विद्या का यह पावन प्रांगण, मां वीणा का बन गया आंगन
सर पर है शिक्षा का आंचल और हाथ में ज्ञान का दर्पण
स्वाभिमान का और 'स्वदेश' का
बांट रहा अमृत यह परिसर। तेरी कृपा हुई।

नदी राप्ती के पावन तट, ज्ञान-जाह्नवी लाए आधा
बुद्धि विशारद, प्रज्ञा, मेधा, राह दिखाते राघव बाबा
गोरख की नगरी सनाथ हुई,
शिक्षित हो गए कंकर-पत्थर। तेरी कृपा हुई।

गीता का यह ज्ञान-कर्म है या 'बिस्मिल' का कर्म-ज्ञान है
राम लखन का चन्द्र चमकता, डी.ए.वी. गौरव महान है
अभिमंत्रित हो उठे ज्ञान से
'मधुसूदन' की वंशी के स्वर। तेरी कृपा हुई।

प्रेमचंद की कथा सुनाता और फ़िराक़ की ग़ज़लें गाता
सबद, रमैनी, दास कबीरा, माटी से 'मोती' उगवाता
एक विद्या व्यसनी का सपना
आज उतर आया कागज पर । तेरी कृपा हुई

भाषा परिभाषा अभिलाषा, नवयुवकों की शिक्षा-आशा
गोरखपुर ने इसको, इसने गोरखपुर को गढ़ा-तराशा
गुरू-शिष्यों की ज्ञान- साधना
अमर हो गयीं सासें नश्वर। तेरी कृपा हुई।

अथ की जय हो, इति की जय हो, कृति की और प्रकृति की जय हो
इस पिछड़ी किसान-धरती-धन के मन स्वीकृति की जय हो
ज्ञान-उजाला चंहुदिश फैला
डी.ए.वी. हो गया धरोहर। तेरी कृपा हुई।

देवेन्द्र आर्य
ए-127, आवास विकास कालोनी,
शाहपुर, गोरखपुर-273006
मोबाइल: 9451565241, 9794840990